

29.7.2020

Date

D.El.Ed. 2nd year (2018-2020)

Saathi

S-4: स्वयं की समझ

Unit-3: अपने कार्यों तथा जीवन उद्देश्यों की समझ।

Topic : स्वयं के बारे में अपने सत्रकर्मियों, विद्यार्थियों, समुदाय आदि की धारणाओं को जानना।

हर इंसान के भीतर एक सामान्य गुण यद्यपि कि वो खुद के विषय में जानना बेहद पसंद करता है। हर आदमी अपने आप के विषय में सकारात्मक बातें सुनने को ललायित रहता है। कहीं न कहीं वह खुद को बेहतर समझने के लिए, दूसरों के पृष्ठपोषण (Feedback) को आधार बनाता है। हमारा दिमाग हमें सबसे बेहतर बना रहने को प्रेरित करता रहता है। इसी वजह से हमारे अंदर ईच्छा और ईच्छाशक्ति का संचार होता है। पृष्ठपोषण हमारी धारणा को और अधिक मजबूत बनाता है। उदाहरण स्वरूप - कवि गोष्ठी में कवि कविता पाठ करते हैं, अगर ताली न बजे या न कविता का सकारात्मक पृष्ठपोषण न मिले तो कवि मायूस हो जाता है। गायक के किसी गाने पर अगर श्रोता झूमने लगे तो गायक और मधुरतम स्वर में गायन करते हैं। न्यूँ कि यह पृष्ठपोषण दूसरों की सकारात्मक अवधारणा है जो किसी काटरी भावना से बनती है।

धारणा अपने मन को कइते हैं। समझ ही धारणा कइलाती है। जिस चीज, विषय को हम जिस तरह समझते हैं वो हमारी धारणा है। जैसे रसगुल्ला है तो वह मीठा ही होगा। नीम है तो वह तीता ही होगा। करेला कड़वा ही होगा। यह हमारी धारणा है।

अवधारणा, अवबाहरी विचार से हमारे विचार समय-शलात के अनुसार बदल जाते हैं या फिर हमारी समझ बदल जाती है तब हम इसे अवधारणा कइते हैं।

इस एक इंसान के प्रति

इंसान एक दूसरे के प्रति सकारात्मक अवधारणा ही रखे यह संभव नहीं। परिस्थिति के हिसाब से सकारात्मक अवधारणा नकारात्मक अवधारणा में बदल सकती है। या फिर नकारात्मक अवधारणा, सकारात्मक अवधारणा में तब्दील हो सकती है।

एक शिक्षक को अपने विषय में बनने वाली सकारात्मक और नकारात्मक अवधारणा के बारे में अवश्य जानकारी रखनी चाहिए। सकारात्मक अवधारणा उनके शिक्षण क्रियाकलाप को सकारात्मक बल देती है, और वहीं नकारात्मक अवधारणा उनके क्रियाकलापों में सुधार करने को इंगित करती है।

नकारात्मक अवधारणा के बन्धनों के कई कारण हैं।

- * किसी से दुरलना - मिलना नहीं, खुद से खिंचे रहना।
 - * विषयान्धर न अपनाना।
 - * अपने विषय से ही ज्यादा काते करना, दूसरों को कम धुनना तथा दूसरों की परवाह न करना।
 - * किसी को लाभ या सहाय्यता न देना।
 - * अक्रमक रवैया
 - * विचार व व्यक्तित्व से खोटा होना।
 - * क्षमतावान न होना, ईमानदार न होना आदि।
- अतः शिक्षकों को स्वयं का मूल्यांकन करना, खुद की क्षमताओं को जानना व अपनी इच्छाशक्ति बनाए रखने की बेहद आवश्यकता है ताकि अपने जीवन में इन तमाम कमियों को दूर किया जा सके और नकारात्मक अवधारणा सकारात्मक में बदल जाय।

कवि आता है कि
विली ग्राइम के अनुसार, 66

When wealth is lost, nothing is lost; when health is lost, something is lost; when character is lost, all is lost. यानि, धन खोया तो कुछ न खोया, स्वास्थ्य खोया तो कुछ खोया परन्तु चरित्र खो किया तो सबकुछ खो दिया।

कठने का तात्पर्य है कि, शिक्षक का चरित्र उसके विचार, कर्म और शिक्षण अभ्यास से बनता है। उनके कार्य कुशलता से ही दूसरों के मन में शिक्षक के प्रति अवधारणा बनती है। अतः अपने धन और स्वास्थ्य से कहीं महत्वपूर्ण है अपने सकारात्मक अवधारणा को बनाए रखना।

सकारात्मक अवधारणा तभी बन सकती है जब हम इस विषय में सतर्क रहें। नकारात्मक को सकारात्मक में बदलने के लिए हमें अपनी आलोचनाओं को सही रूप में लेना होगा।

संत कबीर ने कहा है, "निंदक नियरे राखिए, साँगल कुटिर हवाय, बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय"।

यानि आलोचना करने वालों को अपने समीप रखें, उसे इतनी सतुल्यता दें कि वह सदैव आपके गतिविधियों पर नजर रखे और आपकी गलतियों को तटक्षण बता पाए। इससे हमारे व्यक्तित्व में गंजात्मक बदलाव आते हैं। इस और अधिक कुशल और प्रवीण बन जाते हैं। शिक्षक को अपने विषय क्षेत्र में कुशल और प्रवीण होना ही चाहिए। बड़े-से बड़े साहित्यकार, फिल्मकार, वैज्ञानिक अपनी कृतियों या अपने शोध की आलोचनात्मक टिप्पणी करवाते हैं। ताकि उनका शोध

Date

उनकी कृति समय दर समय बेहतर होसके
 परन्तु कमी कमी आलोचना
 व्यक्तिगत स्वार्थ की वषष्ट संगी की जाती है
 अगर आपने किसी का कोई काम ना कर
 किया था उसकी बातों को अस्वीकृत नही
 तो तत्क्षण सकारात्मक अवधारणा नकारात्मक
 में बदल जाती है। इस वषष्ट से ओढ़ी
 आलोचना इंग्लैंड को मिलती है। ऐसी
 नकारात्मक आलोचना से असुविधा होने
 की पररत नही है। बल्कि अपना काम
 सुलझी से करते रहने की आवश्यकता है।
 इस प्रकार की ओढ़ी अवधारणा पर
 ध्यान देनेसे हमारी कार्यकुशलता पुनः
 प्रभावित होसकती है।

अब संवाल यह है कि किस
 प्रकार के नकारात्मक अवधारणा पर काम करने
 की पररत है और किस प्रकार के
 नकारात्मक अवधारणा पर ध्यान न देना
 चाहिए। इसके लिए इसे स्वार्थ की धारणा
 समझना होगा। इसके लिए कुछ प्रश्न सुझाये
 करने की आवश्यकता है।

- * क्या मैं इस काम को और बेहतर ढंग से
कर सकता हूँ ?
- * क्या मैंने सामन वाले को पूरी बात बुनी है ?
- * जो भी काम मैं करने जा रहा हूँ, उसके
लिए मैं उपयुक्त हूँ या नही।

Date

- * मैं किस काम को बेहतर ढंग से कर सकता हूँ।
- * कोई मेरी आलोचना कर रहा है तो क्या वह सही कह रहा है? क्या मैंने कुछ तथ्य को परखने की कोशिश की है?
- * मैं आलोचक का व्यक्तित्व कैसा हूँ? जिस चीज या विषय की आलोचना कर रहा हूँ उसके बारे में तारतम्य बना रखता भी हूँ या नहीं।

उपरोक्त सवालों का जवाब हमारे क्रियाकलाप को प्रभावित करेगा और हमारे बारे में जो भी नकारात्मक अवधारणाएँ हैं वो बदलती जाएँगी।

शिक्षक को अपने छात्र/छात्राओं से अपने शिक्षण अनुभव का फीडबैक लेते रहना चाहिए। सत्र कर्मियों से बेहतर तालमेल रखना चाहिए। सम्भाव सृजना और सुनिश्चिit होगा क्योंकि अपने सत्रकर्मियों के साथ-साथ समुदाय के बीच शिक्षक की सही अवधारणा बन सके।

अतः हमने जाना कि एक शिक्षक के रूप में अपने छात्र-छात्राओं, अपने सत्रकर्मियों तथा समुदाय की सहायता एक शिक्षक के लिए कितना महत्व रखता है।

Rishi
 रमण कुमार (सहायक प्राध्यापक)
 सत्यमेव जयते कॉलेज ऑफ टीचर एडुकेशन
 किल्ली मोड़ करगंगा।
 8877439545